Date- 1/8/20

* परिवार या स्त्रियों का साम्यवाद

⇒ अभिभावक वर्ग के लिए संपत्ति के निषेध के साथ-साथ प्लेटो उन्हें निजी परिवार से भी वंचित कर देता है।

⇒ शासक वर्ग कुशलता पूर्वक अपने कर्तव्यों का पालन कर सके, इसके लिए उन्हें संपत्ति के मोह के साथ परिवार के मोह से भी मुक्त किया जाना चाहिए।

⇒ प्लेटो का मत है कि परिवार का मोह संपत्ति से अधिक प्रबल होता है।

* स्वरूप

संरक्षक वर्ग के स्त्री या पुरुषों में कोई अपना निजी परिवार नहीं बनाएगा, स्त्रियां सबकी समान रूप से पत्नियां होंगी, इनकी संतानें भी समान रूप से सबकी होंगी, न तो माता-पिता अपनी संतान को जान सकेंगे और न तो संतान अपने माता-पिता को।

REDMI NOTE 8 PRO
AI QUAD CAMERA

* प्लेटो ने अपने परिवार सम्बन्धी साम्यवाद की योजना के पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिए हैं :-

(1) => संरक्षक वर्ग को पारिवारिक मोह से मुक्त करना।

(2) => राज्य में एकता स्थापित करने के लिए।

(3) => महिलाओं की मुक्ति तथा समानाधिकार।

(4) => श्रेष्ठ संतान की प्राप्ती।

(5) => विवाह संस्था में सुधार।

=> क्रासमैन ने विवाह संस्था की समाप्ति को स्त्रियों के लिए अधिकारों की प्राप्ती की दिशा में अत्यन्त महत्वपूर्ण कदम माना है।

* पत्नियों के साम्यवाद का मूल्यांकन

मूल्यांकन के आधार =>

1. => अनावश्यक
2 => लिंग भेद की अपूर्ण व्यवस्था
3 => स्त्री पुरुषों के स्वभाव में भिन्नता
4 => न्याय सिद्धांत के विपरित
5 => यौन संबंध सार्वजनिक विषय नहीं
6 => नैतिक मूल्यों का ह्रास

REDMI NOTE 8 PRO
AI QUAD CAMERA

7⇒ मनोवैज्ञानिक तत्वों की उपेक्षा
8⇒ अत्यधिक एकीकरण राज्य और व्यक्ति दोनों के लिए हानिकारक है।
9⇒ नीरस एवं प्रेरणा रहित।

* अरस्तु द्वारा प्लेटो के परिवार विषयक साम्यवाद की आलोचना —

⇒ समूचे राज्य को परिवार नहीं माना जा सकता।
⇒ पति-पत्नि के संबंधों की पवित्रता का ध्यान नहीं।
⇒ जो वस्तु सबकी होती है उसकी परवाह कोई नहीं करता।
⇒ चरित्र हनन करने वाली व्यवस्था।
⇒ संरक्षक वर्ग पारिवारिक जीवन के व्यावहारिक अनुभव से वंचित रहेगा।
⇒ उत्तम संतान के लिए पशु जगत को लागू करना सही नहीं।
⇒ इस व्यवस्था में एकता की बजाए स्त्रियों के लिए कलह व विवाद ही बढ़ेगा।
⇒ इस व्यवस्था में व्यक्ति को केवल एक साधन बना दिया गया है।
⇒ यदि साम्यवाद अच्छी व्यवस्था है तो यह सभी वर्गों पर लागू होनी चाहिए, केवल संरक्षक-वर्ग पर नहीं।

REDMI NOTE 8 PRO
AI QUAD CAMERA

* निष्कर्ष —

प्लेटो के साम्यवादी विचारों की एक गम्भीर आलोचना इस प्रकार की जाती है कि - प्लेटो को अपने दार्शनिक शासकों तथा सैनिकों के विवेक तथा उत्साह में अधिक विश्वास नहीं था। जिन संरक्षकों के हाथों में राज्य का संचालन सौंपने का समर्थन उसने किया है, उन पर भी वह स्वयं पूर्णरूप से विश्वास नहीं कर सका।

अतः हम कह सकते हैं कि प्लेटो अपने आदर्श राज्य की कल्पना को साकार करने के लिए जिस साम्यवादी व्यवस्था की कल्पना करता है, वह सैद्धांतिक दृष्टि से अच्छी क्यों न हो, व्यवहारिक दृष्टी से देखा जाए तो यह वास्तविकता में खरा नहीं उतरता। परिवार विषयक साम्यवाद की अव्यवहारिकता इस बात से स्पष्ट हो जाती है कि अभी तक व्यवहार में इसे कहीं भी अपनाया नहीं जा सका है।

अपने जीवनकाल में ही प्लेटो को साम्यवाद के सभी पहलुओं के अव्यवहारिक होने के आभास हो गया था। अतः लॉज (Laws) में उसने परिवार, सम्पत्ति तथा विवाह संस्था पर रिपब्लिक से बिल्कुल भिन्न विचार प्रकट किए हैं। लॉज में उसने शासक-वर्ग को सीमित मात्रा में सम्पत्ति रखने तथा पारिवारिक जीवन व्यतीत करने का सौभाग्य प्रदान किया है।

REDMI NOTE 8 PRO
AI QUAD CAMERA